SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

वर्तमान प्ररिपेक्ष में बिहार के अर्थव्यवस्था की दशा एवं दिशा

मुकेश कुमार, शोधार्थी, स्नातकोत्तर वाणिज्य विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार
राधेश्याम सिंह, (Ph.D.) वाणिज्य विभाग
जी. बी. कॉलेज, रामगढ़, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
मुकेश कुमार
राधेश्याम सिंह (Ph.D.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/05/2023
Plagiarism : 00% on 19/05/2023

शोध सार

संयुक्त बिहार वर्तमान बिहार एवं झारखंड में पर्याप्त मात्रा में खनिज संपदावन क्षेत्र, उपजाऊ कृषि, भूमि जलसंसाधन मानव संसाधन छोटे एवं बड़े उद्योगों के साथ ही स्थायी सरकार के बावजूद भी 1990 से 2005 के दशक बिहार की अर्थव्यवस्था की अवन्नति काल के रूप में दर्ज हुआ। पूरे राज्य में नकरात्मक प्रवृतियों की स्थिती लगातार बढ़ती रही। सन् 2000 में बिहार से झारखंड क्षेत्र के अलग हो जाने से साधन सम्पन्न क्षेत्र यथा खनिज क्षेत्र, वनक्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र के साथ ही 70 प्रतिशत आय संसाधन वर्तमान बिहार से अलग हो गया, जबकि 70 प्रतिशत के लगभग जनसंख्या विहार के हिस्से में प्राप्त हुई। विहार में केवल कृषिक्षेत्र के साथ ही डूबक्षेत्र, बाढ़ एवं सूखा क्षेत्र भी हिस्से में प्राप्त हुआ। विहार में पूर्व से व्याप्त भ्रष्टाचार, नौकरशाही, छिनौती, अपहरण, रंगदारी फिरौती से सामाजिक भेदभाव तथा वर्ग–संघर्ष इत्यादि नकारात्मक प्रवृतियों में लगातार वृद्वि को देखा गया। आर्थिक अधिसंरचनाओं यथा सड़क–पुल–पुलियों ऊर्जा क्षेत्र, कृषि क्षेत्र, सिंचाई के साधनों, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के साथ ही कानून व्यवस्था पूर्णतः निचले पायदान पर पहुँच चुका था। राज्य के उद्यमी, व्यवसायी, पेशवर, व्यक्तियों एवं बड़े घरानों के साथ ही बेरोजगार लोग बड़े पैमाने पर राज्य से बाहर पलायन करने लगे थे।

मुख्य शब्द

अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी, शिक्षा.

सन् 2005 में बिहार में सता परिर्वतन हुआ। आर्थिक, सामाजिक एवं संसाधनों के अभाव इत्यादि सभी तरह के विकट परिस्थितियों में नई सरकार कानून व्यवस्था को दुरूरत करते हुए जनता में विश्वास एवं

सुरक्षा की भावना कायम कर संसाधनों का सर्वोतम उपयोग करते हुए बिहार की आर्थिक दशा सुधारने के संकल्प के साथ कार्य करना प्रारंभ किया। विकास के सभी क्षेत्रों में सार्थक प्रयासों से आर्थिक क्षेत्रों में अशांतित मजबूती की प्रवृति कायम हुई। आर्थिक अधिसंरचनाओं के साथ ही कानून व्यवस्था की स्थिति में सुधार हुआ और बिहार कुछ वर्षों में ही 16 प्रतिशत विकास वृद्धि दर के साथ ही भारत में अपना पहचान बनाने मे समर्थ हुआ। इस दौरान में बिहार में कई भीषण बाढ़ एवं सूखे की स्थिति भी बनी। सरकार द्वारा उद्योग एवं खनिज क्षेत्र में अवैध उपयोंगो तथा बाहुबलियों के अवैध कब्जा को समाप्त करने के लिए कठोर कदम पत्थर उधोग क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों में उठाएँ जाने से बिहार की आर्थिक एवं व्यावसायिक गति विधियों प्रभावित हुई। अथक प्रयास के बाद भी राज्य में आशातीत पूँजी निवेश नही हो पाया और उधोग तथा रोजगार का अभाव बना हुआ है। इसी अंतराल में राज्य में पूर्णतः शराब बंदी लागू किये जाने से न केवल 5000 करोड़ रूपये से अधिक राजस्व की हानि हुई, बल्कि इसके रोकथाम नियंत्रण तथा अवैध व्यवसाथ को नियंत्रित करने में अतिरिक्त करोड़ों रूपये खर्च हो रहा है। इसी अवधि में नोट बंदी एवं जी. एस. टी. जैसे आर्थिक सुधारो के प्रयास भी बिहार के अर्थ व्यवस्था की बिहार के अर्थव्यवस्था पर दिखा।

उद्योग, खनिज एवं वन क्षेत्र विहीन बिहार के 10.41 करोड़ जनसंख्या भार तथा अनेक कठोर आर्थिक निणयों के उपरांत भी राज्य की अर्थव्यवस्था में हाल के दशक में दिखा आवेग पिछले भी जारी रहा हैं। गतवर्ष के द्वारा में दिखा आवेग पिछले दो वर्षों के दौरान भी जारी रहा हैं। गतवर्ष केंन्द्रीय सांख्यकी संगठन ने 2011–2012 से 2014–15 के मध्य 10.5 प्रतिशत की वार्षिक दर अंकित किया है जो देश के सभी मुख्य राज्यों से सर्वाधिक है। राज्य की जनसंख्या 2001 से 2001 से 2011 के मध्य 25.1 प्रतिशत दशकीय वृद्धि पर थी जो सम्पूर्ण भारत की वृद्धि दर 17.5 प्रतिशत से अधिक हैं। जनसंख्या दबाव एवं बेरोजगारी नकरात्मक प्रवृतियों जागृत हो रही है। नये परिकल्पना के अनुसार राज्य में सकल राज्य घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 2011–12 से 2015–16 में मध्य 7.6 प्रतिशत भी जबकि सक्रीय अर्थव्यवस्था के लिए यह दर 6.5 प्रतिशत थी। इस दौरान मे प्रतिव्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत का लगभग 35 प्रतिशत आंकी गई। गरीबी अनुपात 2004–2005 में 54.4 प्रतिशत से घटकर 2011–12 में 33.7 प्रतिशत रह गया। वर्तमान सरकार पूर्व के विकास दर 10 प्रतिशत को टिकाऊ बनाते हुए सात निश्चय योजना, यथा, युवा कल्याण, और शिक्षित रोजगार, महिलाओं का अधिकार एवं रोजगार, सभी घरों को हर घर निजली, हर घर स्वच्छ पेयजल, घर तक पक्की गली नालियों, सम्पर्क पथ, शौचालय निर्माण, घर का सम्मान, और उच्च तकनीकि शिक्षापर ध्यान करते हुए आर्थिक सुधारों को कायम करने की नीति पर कार्य कर रही है।

आर्थिक सूचकांक

राज्य की अर्थव्यवस्था काफी हद तक सेवा आधारित है लेकिन इसका एक महत्वपूर्ण कृषि आधार भी है। बिहार में कृषि क्षेत्र से आय 23 प्रतिशत, उद्योग क्षेत्र से 17 प्रतिशत और सेवाक्षेत्र से 60 प्रतिशत आय की प्राप्ति अनुमानित है। 2017–2018 में राज्य का घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 11.3 प्रतिशत रहा तथा प्रतिव्यक्ति आय चालू मूल्य पर 30930 रू. दर्ज किया गया जो भारत में 33 वे स्थान पर है। आर्थिक विकास के उच्च वृद्धि दर वाले क्षेत्र में निर्माण क्षेत्र का 35.84 प्रतिशत संचार का 17.8 प्रतिशत तथा व्यापार होटल रेस्टोरेंट का 17.71 प्रतिशत की प्रवृति पायी जाती है। कृषिक्षेत्र में वृद्धि दर 5.58 प्रतिशत, विनिर्माण क्षेत्र में 7.98 प्रतिशत रहा है।

बिहार पर कुल ऋण राज्य के कुल घरेलू उत्पादन का 20.25 प्रतिशत दर्ज किया गया है। राज्य में वृहद व मध्य आकार की कुल औद्योगिक इकाइयों की संख्या 248 है। पंजीकृत अतिलघु उद्योगों की संख्या 72767 तथा पंजीकृत कुटीर उधोग इकाइयों की संख्या 118,689 है। राज्य के सात जिले उद्योग विहिन है। राज्य विद्युत एवं परिवहन के क्षेत्र में पर्याप्त समृद्धि प्राप्त किया है। इन सब के बाद भी राज्य में बेरोजगारी, गरीबी, एवं नकारात्मक शक्तियाँ, कम होने के स्थान पर बढ़ रही है।

नीति आयोग के अनुसार बिहार में गरीबी का प्रतिशत 33.7 प्रतिशत, साथ भारत में यह आज भी दुसरा सबसे बड़ा गरीब राज्य है। बिहार में गरीबों की संख्या 3.69 करोड़ तथा गरीवी रेखा के नीचे परिवारों (बी. पी. एल. 351. 63 लाख अंकित है। राज्य में हर वर्ष सुखा, बाढ़ एवं महारारी तथा अनैतिक आचरण से बड़े पैमाने पर आर्थिक क्षति

हो रही है जिसका कोई स्थायी समाधान नही हो पा रहा है।

चुनौतियाँ

बिहार के आय– श्रोतो के अभाव, शराबबंदी, बालू – गिट्टी एवं लघु खनिज एवं पत्थर उद्योग को नियंत्रित करने के क्रम में धरती राजस्व की प्रवृति विशेष राज्य एवं विशेष आर्थिक पैकेज की सूविधा न मिलने एवं उच्च विकास दर और समावेशी विकस की चुनौतियों कृषि एवं सहायक क्षेत्रों में उपयुक्त सुधार न होना, प्रतिवर्ष के प्राकृतिक आपदाओं, से होनेवाली आर्थिक क्षति, बदलते सामाजिक परिवेश एवं उत्पादक उद्योग घन्धे की कमी दुसरी तरफ जनसंख्या वृद्धि वेरोजगारी उग्र एवं आंतकवाद अन्य भष्ट्रचार, माफियावादी, नकारात्मक प्रवृतियों अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौतियों बन रही हैं।

आर्थिक विकास की चुनौतियों को रेखाकंन के क्रम में निम्न तथ्य उद्धत होते हैं:

1. बिहार के उत्पादक संसाधनो का अभाव बना हुआ है और झारखंड राज्य गठन के बाद यह और भयावह हो गया है
2. बिहार में भ्रष्टाचर, घुसखोरी, अवैध कारोबारी, प्रवृतियों, माफियाबादी प्रवृतियों तथा ऊपर से नीचे तक अनैतिकव्यवहारों के कारण उत्पन्न होने वाले उग्रवाद, आंतकवाद, छिनौति, अपहरण, चोरी एवं हत्या दिन–प्रतिदिन बढ़े रहे अराजकता स्थिति आर्थिक तंत्र को कमजोर कर रहा है।
3. उद्योग धंन्घों के अभाव तथा कृषि क्षेत्र मे लगातार घाटे की स्थिति नई तकनीकी ज्ञान एवं शिक्षा का अभाव रोजगार के साधनों में वृद्धि के स्थान पर तेजी से हो रही कमी, आर्थिक सुधार को बाधित कर रहा है।
4. तेजी से बढ़ रही जनसंख्या बेरोजगारी अनुत्पादक शिक्षा, व्यवस्था सामाजिक एवं उपभोग सरंचना में वास्तविक्ता से परे हो रहे है। परिवर्तन आर्थिक संतुलन पैदा कर अर्थव्सवस्था को संकटग्रस्त बना रहा है।

राज्य के अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक सुधार के क्षेत्र में सबसे बडी चुनौती प्रवंधकीय अक्षमता का होना है। वर्तमान परिवेश में हमारे पास जो भी संसाधन उपलब्ध है उनका समुचित उपयोग, उत्तम प्रबंध एवं नैतिकता के आधार पर सुनिश्चित किया जाए तो बिहार को फ्रांस, जापान, बनाने से कोई रोक नही सकता।

संभावनाएँ

हमारे पास कठिन श्रम करने वाने हर स्तर के मानव संसाधन उपलब्ध है जो दुसरे क्षेत्रों को समृद्ध बना रहे है। हमारे पास पर्याप्त कृषि भूमि, हर तरफ के कृषि उत्पादन के अनुरूप जलवायु संरचना के साथ पर्याप्त जल एवं ऊर्जा संसाधन उपलब्ध है। राज्य का बालू आज स्वर्ण भंडार की तरफ अर्थ उपार्जन का माध्यम बन रहा है। विहार में हर क्षेत्र एवं दिशाओं मे बालू की जो भंण्डार एवं गुणवता उपलब्ध है उसका मांग विभिन्न राज्यों में हो रहा है। इसमें सही रूप में से बाजारी करण से आय एवं रोजगार अर्थतंत्र को मजबूती प्रदान कर सकता है। बिहार में उत्पादित होने वाले आलू – प्याज, टमाटर, मशरूम, मखाना इत्यादि को सही रूप में व्यवस्थित किया जाए तो इसके विभिन्न कृषि व आधारित उद्योग स्थापित होकर आय एवं रोजगार के साधन बन सकते है। राज्य में प्रर्याप्त मात्रा में चॉवल, गेहूँ, चना, दलहन, मक्का के साथ ही फल एवं फूल का उत्पादन हो रहा है। इनके लिए उपोत्पाद मिलिग तथा बाजार की उपलब्धता एवं भंण्डारण की उत्तम व्यवस्था से वेरोजगारी समाप्त की जा सकती हैं।

निष्कर्ष

राज्य के आर्थिक सुधार एवं चुनैतियों के प्रभाव को कम कर उच्चे परिणाम की प्राप्ति का परिणाम हम 2005–2010 की अवधि में 16 प्रतिशत विकास दर के साथ देख चुके हैं। स्पष्टतः हम अपने संसाधनों को सही रूप में उपयोग किये जाने की व्यवस्था कायम कर ले तो हम राष्ट्रीय स्तर को प्राप्त कर सकते हैं। राज्य सरकार द्वारा प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने के लिए विहार को औद्योगिक विकास के लिए विशेष राज्य की दर्जा दिये जाने की मॉग की जा रही हैं। तो इसे शर्तों के आधार पर यह सुविधा उपलब्ध करा कर राज्य के आर्थिक सुधार में योगदान देना आवश्यक प्रतीत होता है।

संदर्भ सूची

1. बिहार का आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट– 2015 16 और 2016–17।
2. न्याय के साथ विकास यात्रा – रिपोर्ट कार्ड विहार सरकार।
3. बिहार बजट– 2016–2017।
4. ठाकुर अनिल, *बिहार का आर्थिक आंकलन,* मिनाक्षी प्रकाशन दिल्ली।
5. बिहार सरकार का कृषि रोड मैप – 2012–17।
6. नमुना सर्वेक्षण रिपोर्ट –2016–17।
7. दैनिक जागरण।

****